राजस्थान पत्रिका

खुशी का इजहार › विद्यार्थियों को डिग्री और स्वर्ण पदक प्रदान किए

छू लो आसमां...

▪ जैन विवि का तीसरा दीक्षांत समारोह आयोजित

▪ 2281 लोगों को मिली उपाधि

खुशी बेंगलूरु में गुरुवार को दीक्षांत समारोह के बाद खुशी का इजहार करते जैन विश्वविद्यालय के विद्यार्थी।

बेंगलूरु

bangaluru@patrika.com

हौंसले बुलंद हों तो सफलता दूर नहीं रहती। लगन और मेहनत के बल पर डिग्री और स्वर्ण पदक प्राप्त करने के बाद मानों हौंसलों को पंख लग गए हों।

कनकपुर स्थित जैन ग्लोबल कैंपस में गुरूवार को जैन विश्वविद्यालय के तीसरे दीक्षान्त समारोह में इसकी झलक दिखी। स्वर्ण पदक प्राप्त करने वाले विद्यार्थी और मेहनत कर जीवन की ऊंचाइयों को छूने के प्रति आतुर दिखे। समारोह के मुख्य अतिथि और भारतीय विशिष्ट पहचान प्राधिकरण (यूआईडीएआई) के अध्यक्ष नंदन नीलेकणि से डिग्री लेते समय विद्यार्थियों के चेहरे पर वर्षों की मेहनत की सफलता का उत्साह देखते ही बन रहा था। अपने संबोधन में युवाओं को अच्छा इंसान बनने की नसीहत देते हुए नीलेकणि ने कहा कि पढ़ाई के दौरान वे साधारण विद्यार्थी थे। कॉलेज के दौरान उन्हें एहसास हुआ कि दूसरों के मुकाबले उनके लिए उत्कृष्टता और प्रतियोगिता का उतना महत्व नहीं था। दूसरों को पीछे छोड़ने की कोशिश असल जिंदगी में अवरोध का काम करती है। वास्तव में किसी से जीतना है तो अपने अंदर की चुनौतियों से जीतना चाहिए। जिस दिन इंसान खुद से जीतना सीख लेता है सफलता उसके कदम चूमती है। उन्होंने कहा कि किसी भी क्षेत्र में एक दूसरे के सम्मान और सहयोग के बिना आगे बढ़ना मुश्किल होता है। क्योंकि जब अलग-अलग लोग एक साथ मिलकर काम करते हैं तो ताकत मिलती है।

साथ मिलकर चुनौतियां स्वीकारने में उतना डर नहीं लगता जितना कि अकेले ऐसा करने में लगता है। सात लोगों ने मिलकर इंफोसिस की नीव रखी थी किसी एक से शायद यह संभव नहीं हो पाता।

विद्यार्थियों का हौंसला बढ़ाते हुए नीलेकणि ने कहा कि 1978 में हाथों में स्नातक की डिग्री और जेब में 200 रुपए लेकर वे कॉलेज से बाहर निकले थे। उस समय उतने अवसर हमारे सामने नहीं थे जितने कि आज हैं। इन सबके बावजूद जब वे सफल हो सकते हैं तो संभावनाओं से भरे वर्तमान आधुनिक युग में युवाओं के सफल नहीं होने का कोई कारण उन्हें नजर नहीं आता है।

उन्होंने युवाओं को अपना लक्ष्य खुद निर्धारित कर निरंतर आगे बढ़ने की सलाह दी। विद्यार्थियों के उज्ज्वल भविष्य की कामना करते हुए जैन विश्वविद्यालय ट्रस्ट के अध्यक्ष डॉ. चेनराज रायचंद ने कहा कि आगे बढ़ने के लिए जड़े मजबूत करना आवश्यक है। हर किसी में असाधारण काम करने की क्षमता होती है लेकिन इसमें सफल वही होते हैं जिनकी जड़े मजबूत होती हैं। जो हर परिस्थितियों से निपटने के लिए हमेशा तैयार रहते हैं। इंसान का एक प्रतिशत मस्तिष्क हर चुनौती से निपटने की क्षमता रखता है। हर व्यक्ति के मस्तिष्क में सोने की खान छिपी है जरूरत है तो बस इसके इस्तेमाल की। उन्होंने कहा कि युवाओं को नाम और शोहरत के पीछे नहीं भागना चाहिए बल्कि कड़ी मेहनत करने के साथ उदारता और विनम्रता बनाए रखने की सलाह दी।

इससे पहले जैन विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ. एन. सुंदरराजन ने स्वागत भाषण दिया। विश्वविद्यालय के कुलाधिपति डॉ. सीजी कृष्णदास नायर ने कार्यक्रम की अध्यक्षता की। समारोह में स्नातक, स्नातकोत्तर और अनुसंधान क्षेत्र सहित 2281 विद्यार्थियों को डिग्रियां और चार छात्राओं को पीएचडी की उपाधी के साथ 40 स्वर्ण पदक भी प्रदान किया गया।